P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

नारी स्वतंत्रता के समयानुकूल बदलते आयाम

ए.के.सर्राफ
प्राचार्य,
एकलव्य महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान

विजय सर्राफ
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति शास्त्र विभाग,
राजकीय पी.जी. कालेज,
झालावाड़, राजस्थान

सारांश

स्वतंत्रता के 71 वर्षो के बाद भी महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता बनी हुई है। यद्यपि महिलाओ ने समाज में अपना स्थान बनाने में काफी तरक्की की है लेकिन आज भी महिलाओं को समय–समय पर उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों में संरक्षण एवं प्रोत्साहन की जरुरत पड़ती है। इसके लिये आवश्यक कि हम अतीत का अवलोकन करे और देखे की प्रारम्भ से हमारी संस्कृति में महिलाओं की स्थिति कैसी रही है ? कौन सी परिस्थितियों ने महिलाओं को और समाज को पतन के गर्त में धकेला। इस पतन के बावजुद स्त्रियों ने कैसे संघर्ष किया।

पौराणिक युग में महिलाये अबला नहीं थी। समाज में उनका बराबर का स्थान था। गुप्त काल में भी स्त्रियों कि दशा बहुत अच्छी थी। किन्तु मनुष्य काल में मुगल संस्कृति आने के बाद महिलाओं कि सुरक्षा खतरे में पड़ गयी। विलासिता का वर्चस्व, सत्ता का दुरुप्रयोग, बहु पत्नि प्रथा आदि की वजह से महिलाये घर में कैद होकर रह गयी और समाज में पर्दा प्रथा, बाल–विवाह, कन्या हत्या, सती प्रथा एवं शिक्षा कि समाप्ति जैसी कुप्रथायें समाज में स्त्रियों के लिये व्याप्त हो गयी। कई समाज सुधारक जिनमें राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचंद्र विद्या सागर थे, जिन्होने समाज में कुरुतियों के विरुद्ध जागरुकता लाने का प्रसास किया।

1601 में ईस्ट इंडिया कम्पनी का आगमन हुआ। स्थितियों में बदलाव के प्रयास हुये लेकिन बदलाव 19 वीं शताब्दी में आना शुरु हुआ। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बहुत प्रयास हुये लेकिन यर्थात में परिवर्तन श्रीमती इंद्रा गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद आया। शिक्षा का विस्तार नारी का घर से बाहर निकलना आत्मविश्वास कि वृद्धि आदि ने समाज में परिवर्तन किया किन्तु दहेज प्रथा एवं घरेलु हिंसा ने फिर नारी को कमजोर बनाने का प्रयास किया। किन्तु 20 वीं शताब्दीं पावितर्नों के साथ 21 वीं शदी की नारी ने समाज में अपने आप को बुलन्दी के साथ खड़ा किया है। जिसमें समाज में एक प्रतिस्पर्धा कि भावना आयी है जिसमें बलात्कार, घरेलू हिंसा, तलाक, पारिवारिक विघटन जैसी समस्यायें उत्पन्न हुई है। इन समस्याओं का समाधान करना हमारी लोकतांत्रिक सरकार का दायित्व है, साथ ही समाज में भी अपना दायित्व निभाने का प्रयास किया है। आज नारी पुरे आत्मविश्वास से जिवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और आने वाली बाधाओं से जुझने में भी वह सक्षम है, जो कि एक अच्छा एवं सकारात्मक प्रयास है।

मुख्य शब्द : शक्तिशाली, सशक्तिकरण, संस्कार, शास्त्रार्थप्रकाण्ड, सतालोलुपता, पारस्परिक।

प्रस्तावना

स्त्री–पुरूष परिवार रूपी गाड़ी के दोपहिये है, जिनमे सतुंलन होना आवश्यक हैं। परिवार से समाज बनता है, समाज से राष्ट्र। किसी देश की पहचान उस देश के नागरिकों से ही होती है।

भारत के संदर्भ में हम द्रष्टिपात करे तो अतीत में महिला ये पूर्ण स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, और सशक्त रही है। लेकिन आज जब समाज में देखते है तो आश्चर्यचकित होकर सोचने को बाध्य होते है कि कालातंर में महिलायें इतनी दयनीय एवं कमजोर कैसे हो गई। देवीदुर्गा एवं लक्ष्मी सरस्वती का अवतार माना जाने वाली महिला इतनी शक्तिहीन कैसे हो गई। तब हम पीछे मुड़कर अतीत पर प्रकाश डालते है तो सारी स्थितियां खुलकर सामने आ जाती है।

पौराणिक परिदृष्य एवं महिलाये

जब हम पौराणिक इतिहास की और मुड़कर देखते है तो उस दौर में नारी पूर्ण स्वतत्रं, संस्कारवान, निडर, साहसी थी। प्रत्येक क्षेत्र में वह पुरूषो के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने में सक्षम थी। शिक्षा, आध्यात्मिकता युद्ध हो या शास्त्रर्थ, हर क्षेत्र में स्त्रियों को आगे बढ़ने का

अवसर प्राप्त था। इसका उदाहरण महारानी कैकेयी है जिन्होने युद्ध–भूमि में महाराजा दशरथ का साथ देकर उनको विजय बनाया था। इसी प्रकाश शास्त्रार्थ में संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित का शंकराचार्य जी से शास्त्रार्थ हुआ जिसमें पराजित होने पर जिव्हा काटे जाने की शर्त थी तब पराजय के कगार पर पहुंचे अपने पति को बचाने के लिये ऋषि पत्नी ने शास्त्रार्थ स्वयं करने की इच्छा व्यक्त की और अपने पति को पराजित होने से बचाते हुये पराजित पक्ष को जिव्हा काटने की शर्त से मुक्त कर दिया।

इस प्रकार इतिहास इस बात का साक्षी हे कि भारत में गार्गी, मैत्रयी एवं विदग्धा जैसी विदुषी महिलायें उस काल की महिलाओं का प्रेरणा स्त्रोत रही है। वेदों का अध्ययन, यज्ञों का संचालन एवं ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने का उन्हें अधिकार था। वेदों में सावित्री, अपाला, सूर्या, यमी, देवयानी आदि विदुषियों का उल्लेख मिलता है। लेकिन रामायण एवं महाभारत काल में बहुपत्नि प्रथा एवं बेमेल विवाह के प्रचलन नें स्त्रियों की स्थिति को कमजोर करना प्रारम्भ कर दिया था।

अध्ययन का उद्देश्य

महिला सशक्तिकरण एवं समयानुकुल बदलते आयाम लेख का मुख्य उद्देश्य यही है कि हम अतीत कि और मुड़कर देखे कि महिलायें क्या थी? समाज में उनका कैसा स्थान था। कैसे समाज का पतन हुआ और नारी रसातल कि और चली गयी। जैसे स्वामी दयानंद सरस्वती ने कहाँ था–''वेदों कि और लोट चलो'' ठीक इसी प्रकार अतीत पर दृष्टिपात करके वर्तमान को सशक्त बनाना एवं आगे बढ़ते नारी समाज को प्रोत्साहित करना ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है।

भारतीय इतिहास एवं महिलायें

भारत में गुप्त साम्राज्य में महिलाओं की स्थिति बेहतर थी। लेकिन मुगल काल अर्थात मध्ययुगीन काल में भारतीय समाज का माहौल दूषित होने से महिलाओ की सुरक्षा करना पुरूषो की मजबुरी बन गया और समाज में अनेक सामाजिक बुराइयों ने अपनी जगह बना ली।पर्दा प्रथा, बालविवाह, कन्या हत्या, सती प्रथा, देवदासी प्रथा आदि के कारण महिलाओं की स्थिति बद से बदतर होती चली गई। लेकिन विपरीत परिस्थितियों के बावजुद कुछ महिलाओं जैसे चाँद बीबी, रजिया सुल्तान, नूरजहॉ एवं अहिल्याबाई आदि अपनी शक्ति का लोहा मनवाने में सफल रही। इसी प्रकार पन्नाधाय एवं जीजा बाई जैसी वीरांगनाओं ने युद्ध क्षेत्र में न जाकर भी अपने कर्त्तव्यों का पालन कर इतिहास में अपनी जगह बनायी। तत्पश्चात ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में आने के बाद राजनैतिक परिवर्तन शुरू हुये। ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजाओं के आपसी झगड़े सत्तालोपुता एवं साम्राज्य विस्तार की भावना का फायदा उठाया और अपना शासन स्थापित करने का प्रयास शुरू कर दिया। ईस्ट इंडिया कम्पनी के भारत आने के बाद महिलाओं कि स्थिति में कोई फर्क नहीं आया। बल्कि सत्ता हथियाने के लिये नये तरीके ईजाद किये जाने लगे। हड़पनीति फलस्वरूप ही 1857 का स्वतंत्रतता संग्राम हुआ जिसमें झांसी की रानी लक्ष्मी बाई की भूमिका महत्वपूर्ण रही। जिसमें यह सिद्ध हो गया कि आत्म सम्मान की रक्षा वीरता, साहस, बुद्धि एवं युद्ध कौशल में भारतीय महिलायें पीछे नहीं है।

भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में महिलाओ ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। विजय लक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी (अपने बाल रूप में) एवं भील एवं आदिवासी महिलाओ में बढ़–चढ़ स्वंतत्रता आन्दोलन में भाग लिया।

नारिया ने ही लाला राय, विपिन चन्द पाल सुभाषचन्द बोस, महात्मा गांधी, जैसे देशभक्ति के प्रशिक्षित सपूत देकर भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को नेतृत्व दिया साथ ही भगत सिह, चन्द्र शेखर आजाद, खुदीराय बोस जैसे वीर एवं साहसी सपूतो में अंग्रेजो के छक्के छुड़ा दिये जोकि उनकी अपनी वीर माताओ के निर्देशन और प्रोत्साहन के बिना सुझाव नहीं था।

स्वतंत्रता के पश्चात नारियों की स्थित

15 अगस्त 1947 मे भरत की स्वतंत्रता के साथ भारत में महिलाओ की स्थिती सुधारने की दिशा मे प्रयास आरम्भ कर दिये गये। भारत के सविधान में समानता के मौलिक अधिकार के साथ अनेक प्रावधान रखे गये। राज्य के नीति निदेशक तत्वों में महिलाओ के विकास एवं शिक्षा के लिये अनेक प्रावधान रखे गये।

स्वतंत्रता के उपरान्त एक चेतना एवं जागरूकता तो महिलाओ में आयी किन्तु वे अपने परम्परागत सस्कारो मे सिमटी रही। घर की जिम्मेदारी, शिक्षा के प्रति उदासीनता, पुरूषो की दासी, पति को ईश्वर का दर्जा देने वाली, परिवार के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना सखने वाली पतिव्रता नारी अपने आपको संस्कारी नारी के साचे में ढालकर दुखो में भी खुशी का इजहार करती रही। साहित्य समाज का दर्पण होता है। यदि हम 1950 एवं 60 के दशक की कहानियां रचनायें, उपन्यास पढ़े अथवा उस दौरान की फिल्मों का अवलोकन करे तो ये सिद्ध हो जायेगा कि उस समय की आर्दश नारी कौन थी। सबसे ज्यादा समर्पण करने वाली, अपने आत्मसम्मान को ताक पर रखने वाली, सबसे ज्यादा समर्पण करने वाली, दुःखो को झेलकर, आंसुओ को पीकर मुस्काने वाली नारी ही आर्दश नारी रही।

1971 मे श्रीमती इंदिरा गांधी का विश्व पटल पर छा जाना भारतीय नारीयो के लिये प्रेरणा स्त्रोत बना। इससे प्रेरित होकर महिलाओ ने जिस तेजी से प्रगति की वह प्रशसंनीय है। आर्थिक क्षेत्र में, राजनीतिक क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में, पारिवारिक क्षेत्र में स्त्रियों का जो चहुमुखी विकास हुआ वह किसी चमत्कार से कम नहीं था। पुरूषो ने भी महिलाओ के वर्चस्व को एवं उनकी पहचान को स्वीकार करना प्रारभ किया। जहां समाज में पुरूष प्रधान मानसिकता थी उसमे परिवर्तन आना शुरू हो गया। नारी के साथ हर क्षेत्र में समायोतन स्थापित करना उनकी मजबूरी या आवश्यकता बन गया।

ठसी दौरान 'अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस' का आवाहन जो 8 मार्च 1917 से किया गया था। 1975 को भारत में 'महिला वर्ष' के रूप में घोषित किया गया। जिसमे आयोजित कार्यकमो में महिलाओ में काफी जागरूकता आत्मविश्वास एवं चेतना का संचार हुआ।

इस विकास के साथ समाज में अनेक समस्याओ ने जन्म ले लिया जिसमे दहेज प्रथा, परिवार मे समायोजन की समस्या, घरेलु हिंसा, मारपीट आदि की बाढ़ आ गई। अहं का टकराव बढ़ गया। पारिवारिक समस्यायें नये–नये रूप में समाज के सामने आने लगी।

इन समस्याओ के बावजूद महिलाओ का विकास रूका नहीं बल्कि समस्याओ से मुकाबले के लिये महिलाओं ने और कमर कस ली और उनका पहला हथियार आत्मनिर्भरता बन गया। आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर उन्मुख होते ही उनमे आत्मबल और आत्मविश्वास तेजी से बढ़ा। इसी संघर्ष के दौर मे अस समय की महिला पीढ़ी ने यह तय कर लिया कि आने वाली पीढ़ी को वह पूर्ण शिक्षित और आत्मनिर्भर बनायेगी। यही सपना उसने साकार किया और नई पीढ़ी को अपने पैरो पर खड़ा होने का हौसला दिया और प्रगति की राह दिखाई।

21वीं सदी में महिलाये

अपने बड़ो के अनुभवो का फायदा उठाकर स्वतत्रंता के बाद की तीसरी युवा पीढ़ी ने अपने आपको पूर्ण सक्षम बना लिया है। किसी भी क्षेत्र में देखा जाये तो कही भी महिलाये पीछे नहीं है। चाहे ग्रामीण परिवेश हो या शहरी, सभी में आगे बढ़ने की होड मची हुई हैं। महिलाओ के लिये जीवन का कोई भी क्षेत्र वर्जित नहीं है। आकाश से लेकर जीम तक उन्होने अपनी पहचान बनाई है।

साहित्य के क्षेत्र महिलाओ का कोई मुकाबला नहीं है। तस्लीमा नसरीन जैसी बेवाक लेखिका ने पूरे विश्व में तहलका मचाया है। इसमे पूर्व की भारतीय महिलाओ में महादेवी वर्मा, महाश्वेता देवी, सुमद्राकुमारी चौहान बेवाक साहित्यकार एवं कवियत्री रही है। फिल्म साहित्य मे प्रिंयका चोपड़ा, शिल्पा शिरोडकर, दीपिका पादुकोण ने पूरे विश्व मे तहलका मचाया है। वर्तमान समय में लेखन की, मंचन की, संगीत एवं महिला कलाकारो की बाढ़ आ गई है। ग्रामीण परिवेश की महिलाओ भी पीछे नहीं है।

वैज्ञानिक क्षेत्र में कल्पना चावला और सुनीता विलियम ने भारतीयो के मन मस्तक को झकझोर कर रख दिया है। महिलाये प्रत्येक क्षेत्र मे पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर साथ दे रही है। भारतीय महिला वैज्ञानिको मे कमला सोहनी, अन्नामणी, असीका चटर्जी, राजेश्वरी चटर्जी, दर्शन रंगानाथन, महारानी चक्रवर्ती, चारू सीता चकवर्ती, मंगला नार्लीकर जैसे अनगिनत नाम है जो विज्ञान के क्षेत्र मे हमारे देश को ऊँचाई तक पहुँचाने में लगे हुये है।

महिलाओं की तादात मेडिकल के क्षेत्र में भी बढ़ती जा रही है। चिकित्सा के क्षेत्र में भारत में इतना विकास है कि विदेशों से लोग इलाज के लिये भारत आ रहे है। प्रति वर्ष असंख्य छात्रायें अपनी मेहनत के बल पर मेडिकल कि शिक्षा प्राप्त करने के लिये चयनित कि जाती है। संविधान में दिये आरक्षण का फायदा हर वर्ग कि महिलाओं ने उठाया है और मेडिकल के क्षेत्र में अच्छी संख्या में उपस्थिति दर्ज कि है।

समाज के विकास में महिलाओं का अतुलनीय योगदान है स्वयं के विकास के साथ समाज में महिलाओं का उत्थान करना, आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता करना, घरेलु हिंसा, मदपान, धुम्रपान आदि विकृत्तियों ने महिलाओं को सुरक्षा देना आदि काम महिलायें बढ़े साहस के साथ महिला संगठनों के माध्यम से कर रही है। (महिला स्वयं सहायता समूह) बना कर आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाया है। समाज सेवा के क्षेत्र में उन्होनें भारत में ही नहीं विदेशों में भी अपनी सेवा का परचम लहराया है। इनमें मदर टेरेसा, किरण बेदी, पूजा वारीमर, लैला जानाह, अजेयता शाह, शीतल शाह, प्रिया नायक, सैलानी मलोहत्रा, आकांशा हजारी जैसे अनगिनत नाम है, जिन्होनें समाज के विकास में अमुल्य योगदान दिया है।

आर्थिक क्षेत्र में महिलायें स्वालम्बीय तो हुई है, साथ ही उन्होनें मिसाल प्रस्तुत कि है। इन नामों ने वीना अग्रवाल, चन्दा कोचर, सुधामुर्ति जैसे असंख्य नाम है, जो देश का नाम रोशन करने के साथ महिलाओं के लिये प्रेरणा स्त्रोत बने है।

धार्मिक क्षेत्र में भी महिलायें पीछे नहीं है, महिलाये पुरुषों संतो की तुलना में ज्यादा लोकप्रियता हासिल कर रही है, धर्म कोई भी हो, हर जगह महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं को आरक्षण कि आवश्यकता नहीं है, वे अपने बलबुते पर राजनीति में सफलता हासिल करने में माहिर है। पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल, प्रधानमंत्री के रुप में श्रीमती इन्द्रा गांधी, मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिंधिया, राबड़ी देवी, मायावती, ममता बनरजी, जयललिता जैसे अनगिनत नाम है। अनगिनत महिलाओं ने राज्यपाल, अनेको ने राजदुत, मंत्री मण्डल के सदस्य आदि के रुप में अपनी प्रतिष्ठा बनाई है और कुशल प्रशासक सिद्ध हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलायें पीछे नहीं है।

कम्प्युटर के क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश बहुत तेजी से हुआ है। संचार के क्षेत्र के साधनों के विकास के साथ महिलाओं की बेतहासा प्रगति हुई है। ईन्टरनेट के माध्यम से सारी दुनिया से जुड़ी है। किसी भी श्रेणी की महिलायें हो मोबाईल क्रांति ने समाज का स्वरुप ही बदल दिया है। वाटसप, ऑन–लाईन मार्क्रेटिंग, मोबाईल के माध्यम से परसपर जुड़ाव मे क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है।

इस प्रकार हर क्षेत्र में महिलाओं का प्रवेश हुआ है। मीडिया हो या मनोरंजन, पर्वतारोहण या खेल का मैदान, सेना का क्षेत्र हो या शिक्षा का,बहुराष्ट्रीय कम्पनियां हो या सरकारी क्षेत्र कोई भी अछूता नहीं है।

इस विकास कि सीढ़ी के बावजुद नारी ने सामाजिक व पारिवारिक जिम्मेदारीयों की उपेक्षा नहीं की है।

घर और बाहर दोनो मोर्चो पर उसने सफलता पूर्वक काम किया है। परन्तु अपवाद अभी भी है। हम यह नहीं कह सकते कि शत प्रतिशत महिलायें विकास कि और अग्रसर हुई है, लेकिन फिर भी विकास का आंकड़ा कमतर नहीं है। सरकार के प्रयासों ने, महिला संगठनों एवं सामाजिक संगठनों ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। सरकार द्वारा सेवाओं में, शिक्षा के क्षेत्र में तमाम कमजोर वर्ग, पिछड़ा वर्ग, आदिवासी वर्ग, अनुसूचित जाति

वर्ग कि महिलाओं को विशेष आरक्षण देने के परिणाम स्वरुप कमजोर एवं उपेक्षित वर्गा का प्रतिशत सभी क्षेत्रों में बढ़ा है एवं वे सभी वर्ग काफी लाभांवित हुये है।

महिलाओं के विकास के साथ–साथ महती आवश्यकता आज इस बात कि है कि विकास के मार्ग पर महिला व पुरुष एक दुसरे को प्रतिद्वन्दी न समझे, बल्कि परसपर सहयोग एवं समायोजन कि भावना रखे ताकि समाज और राष्ट्र का विकास हो सके।

अंततः आवश्यकता इस बात कि होनी चाहिये कि विकास के मार्ग में लड़ाई वर्चस्व कि नहीं होनी चाहिए, बल्कि गाड़ी के दो पहियों के समान सतुलन का प्रयास होना चाहिये। इसमें चाहे पारिवारिक क्षेत्र हो या सेवा का या व्यवसाय का। प्रत्येक स्थान पर समायोजन कि उपादेयता है। अन्यथा हम विकास के स्थान पर पतन कि और अग्रसर होगें। अतः मानसिक बदलाव के साथ ही पुरुषोचित अहम को स्वनियंत्रित रखना होगा और महिलाओं को भी अतिउत्साह के स्थान पर आपे में रहकर पुरुष के साथ सहयोगी कि भूमिका बनानी होगी। समाज मे यह संतुलन कड़े अभ्यास हठ इच्छा शक्ति के द्वारा ही स्थापित हो सकेगा। तभी समाज में परिवार में सामंजस्य स्थापित होगा। हर्ष का विषय यह है, हमारा समाज स्वंय में इस और निरंतर अग्रसर है।

निष्कर्ष

1. महिला एवं मानवाधिकार में लेखन ने महिलाओं मानवाधिकार कौन से दिये है एवं उन्हे किस प्रकार समाज में पुरुषों के समकक्ष रखने कि चेष्टा कि है, यह बताया है।
2. 'महिला सशक्तिकरण क्यों और कैसे' अपने सम्पादकीय लेख के लेखक में यह प्रयास किया है कि महिलाओं को सशक्तिकरण कि आवश्यकता क्यों है और कैसे सशक्तिकरण हो सकता है।
3. 'महिला सशक्तिकरण का सच' इस पुस्तक में लेखिका समाज का सच सामने लाने का प्रयास किया कि वास्तव कितना सशक्तिकरण ईमानदारी से हुआ है।
4. 'महिला और मानवाधिकार' इसमें लेखिका ने महिलाओं के मानवाधिकारों पर प्रकाश डाला है साथ ही महिलाओं इस संदर्भ में जागरुक लाने के प्रयासों के विषय में बताया है।
5. 'समाज और नारी' इसमें लेखक ने समाज में नारी कि स्थिति कैसी है ? कैसी रही है ? एवं सुधार के लिये क्या प्रयास किये जा रहै है इस पर प्रकाश डाला है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *महिला सशक्तिकरण विभिन्न आयाम–उमेश प्रताप सिंह*
2. *महिला सशक्तिकरण ने संसद कि भूमिका–विरेन्द्र सिंह*
3. *महिला सशक्तिकरण– रामा शर्मा एण्ड एम. के. मिश्रा*
4. *Essayon the position of woman of India.*
5. *Woman's guest for equality with men in India.*
6. *Essay on: Woman's moment in India pre Independence women's movement.*
7. *Essay on: A useful essay on woman.*
8. *Essay on: The role of woman in Politics.*
9. *पंचायती राज्य और महिला सशक्तिकरण– सीमा सिंह*
10. *नारीसशक्तिकरणः पुरुष वर्चस्व को चुनौती।*